

अक्रम यूथ

नवम्बर 2021 हिन्दी

दादा भगवान परिवार



अनुक्रमणिका

5 आइजनहावर मैट्रिक्स

8 ज्ञानी विद्यूथ

11 महान पुरुषों की झाँकी

14 एकिटविटी

आपकी प्रायोरिटी क्या है?

16 एक्सपेरिमेन्ट

20 अनुभव

21 ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा

23 #कविता

नवम्बर 2021

वर्ष : 9, अंक : 7

अखंड क्रमांक : 103

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimplebhai Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription

India : 200 Rupees

USA: 15 Dollars

UK: 12 Pounds

5 Years Subscription

India : 800 Rupees

USA: 60 Dollars

UK: 50 Pounds

In India, D.D. / M.O. should be drawn
in favour of "Mahavideh Foundation"
payable at Ahmedabad.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved



सुंपादकीय

प्रिय पाठक मित्रों,

क्या आपको ऐसा लगता है कि आपका जीवन बहुत व्यस्त है? क्या आपको एक साथ बहुत सारे काम याद आ जाते हैं? क्या आपके काम की लिस्ट बढ़ती ही जाती है? क्या ऐसा होता है कि कोई एक काम इतना लंबा खिंचता है कि बाकी के सारे काम एक तरफ रह जाते हैं? या फिर ऐसा लगता है कि ढेर सारे कामों के बीच आपको अपने लिए समय ही नहीं मिल पाता है? क्या काम का बोझ और स्ट्रेस बढ़ता जा रहा है? यदि इनमें से एक भी प्रश्न का जवाब 'हाँ' में है तो आपने एकदम सही टॉपिक वाला मैगज़ीन पढ़ने के लिए चुना है।

हाँ, प्रायोरिटी! प्रायोरिटी अर्थात् कोई कार्य, बात या जिसे हमें प्राथमिकता या महत्व देना हो। हम सब प्रायोरिटी का अर्थ तो जानते हैं पर अपने जीवन में प्रायोरिटी कैसे सेट की जाए उसे लेकर हमेशा परेशान रहते हैं। बहुत बार हम अपने शौक और इच्छाओं को अधिक महत्व दे देते हैं, जिससे जाने-अनजाने हमारा लक्ष्य एक तरफ रह जाता है, और कभी-कभी हमारे करीबी लोगों को दुःख भी पहुँचा देते हैं।

मित्रों, इस अंक में हमें अपने जीवन में प्रायोरिटी सेट करनी क्यों ज़रूरी है? इसके क्या फायदे हैं? और प्रायोरिटी किस तरह सेट करें इसकी पूरी समझ मिलेगी।

- डिम्पल भाई मेहता



सर, मैं स्टडी के साथ जॉब भी करता हूँ इसलिए मुझे बहुत परेशानी होती है। कभी-कभी दोनों काम साथ में आ जाते हैं, तब समझ में नहीं आता कौन सा काम पहले करूँ।

"गुड मॉर्निंग स्टूडेन्ट्स! तो आज कुछ नया सीखने के लिए तैयार होन सब?"

सभी स्टूडेन्ट्स एक साथ बोल उठे, "हाँ सर!"

प्रोफेसर ने बोलना शुरू किया, "ओके, मुझे बताओ कि तुम जो काम करना चाहते हो उसे तय किए गए समय पर पूरा कर पाते हो?"

तनिश ने कहा, "अगर एक ही काम करना हो तो अच्छे से हो जाता है लेकिन अगर एक साथ दो-तीन काम करने हों तो नहीं हो पाता है।"

ऋषभ ने तनिश की बात का समर्थन करते हुए कहा, "कभी-कभी उलझन हो जाती है कि कौन सा काम पहले करूँ? प्रोजेक्ट, स्टडी या स्पोर्ट्स।"

रोहित ने भी अपनी समस्या बताई "सर, मैं स्टडी के साथ जॉब भी करता हूँ इसलिए मुझे बहुत परेशानी होती है। कभी-कभी दोनों काम साथ में आ जाते हैं तब समझ में नहीं आता कौन सा काम पहले करूँ।"

प्रोफेसर ने कहा, "ठीक है! आपको यह तय करना है कि आपको जितने काम करने हैं उनमें से किस काम को कितना इम्पॉर्टन्स देना है। और इसके लिए आपको अपनी प्रायोरिटी पता होनी चाहिए।"

"बट सर, यहीं तो सवाल है कि प्रायोरिटी कैसे सेट की जाए?" ऋषभ ने पूछा।

प्रोफेसर ने जवाब देते हुए कहा, "ऋषभ, यह तुम्हारे अकेले का प्रश्न नहीं है लेकिन यहाँ जो बैठे हैं, लगभग सभी का यही प्रश्न होगा। तो चलो, आज इसका समाधान ढूँढ़ते हैं आइजनहावर मैट्रिक्स के द्वारा, जिसे 'अर्जन्ट-इम्पॉर्टन्ट-मैट्रिक्स' कहा जाता है।"

आइजनहावर मैट्रिक्स

- सबसे अधिक महत्वपूर्ण और तुरंत करने पड़े ऐसे कार्य।
- ऐसे कार्य जितना हो सके उतनी जल्दी करें।
- उ.दा. असाइनमेन्ट की डेलाइन, परीक्षा, हेल्थ इमरजेन्सी इत्यादि।

DO



अर्जन्त

- बहुत महत्वपूर्ण काम लेकिन तुरंत करने पड़े इतने अर्जन्त नहीं।
- ऐसे काम कब करने हैं उसका शोड्यूल तय करें और उन्हें पूरा करें।
- उ.दा. - परीक्षा की तैयारियाँ, पर्सनल डेवेलपमेन्ट, लक्ष्य तय करके उसकी तैयारी करना, नियमित कसरत करना इत्यादि।

SCHEDULE



अर्जन्त नहीं

DELEGATE



- ऐसे कार्य जो तुरंत करने पड़े ऐसे हैं, पर महत्वपूर्ण नहीं हैं।
- हो सके तो ऐसे काम दूसरों को सौंप दें या फिर बाद में करें।
- उ.दा - प्रिन्ट आउट निकालना, बाइक रिपेयर करवाना, ऐसे काम दूसरे को सौंप सकते हैं। कोई फोन कॉल करना, टाइमशीट भरना, बिल भरना इत्यादि।

DELETE



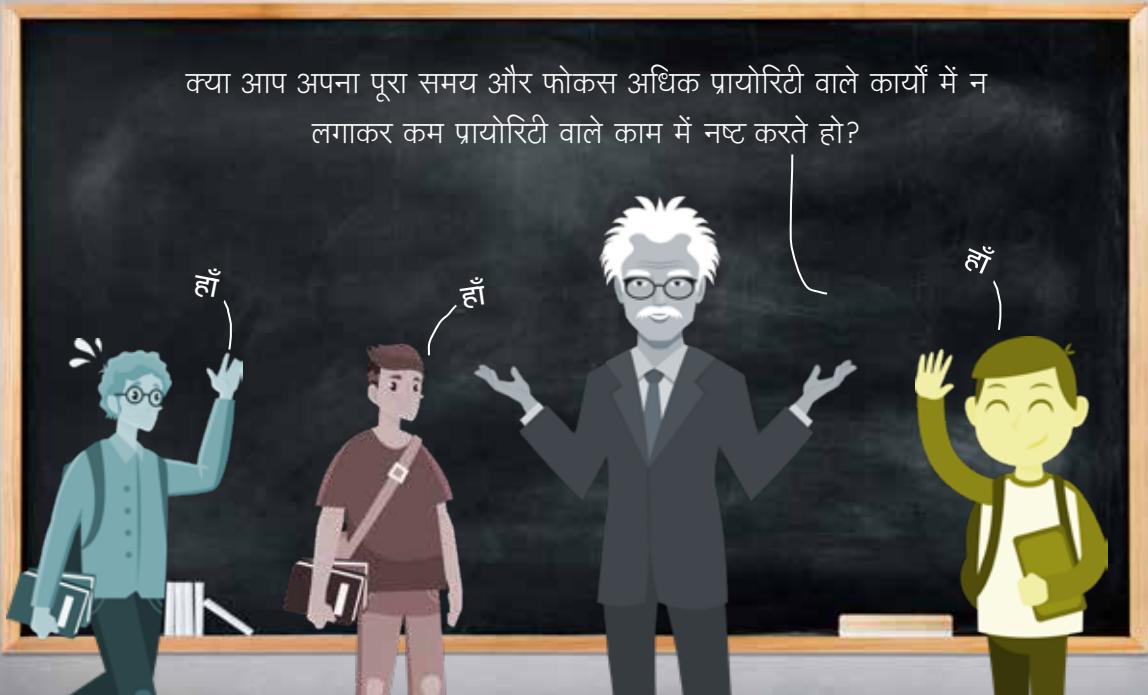
- ऐसे कार्य जो तुरंत करने पड़े ऐसे भी नहीं हैं और महत्वपूर्ण भी नहीं हैं।
- ऐसे कामों के लिए सब से कम समय और कम प्रायोरिटी दें।
- उ.दा - टी.वी. - मूवी देखना, विडीयो गेम्स खेलना, फोन पर गप्पे मारना, टाइमपास के लिए सोशियल मीडिया पर ब्राउज़ करना इत्यादि।

कार्य की प्रायोरिटी सेट करते समय हम स्वयं से ही पूछें कि वह काम आइज नहावर मैट्रिक्स के कौन से बॉक्स में फिट होता है?

आपके लिए सबसे अधिक प्रायोरिटी किस चीज़ की होनी चाहिए?



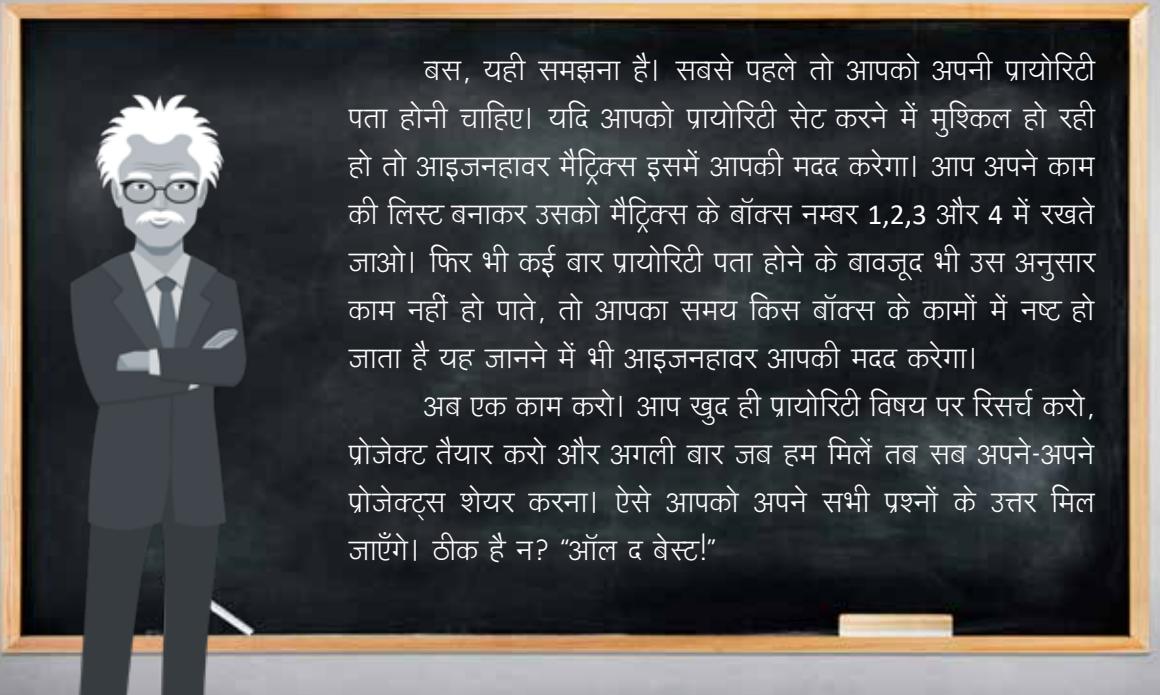
क्या आप अपना पूरा समय और फोकस अधिक प्रायोरिटी वाले कार्यों में न लगाकर कम प्रायोरिटी वाले काम में नष्ट करते हो?





बस, यही समझना है। सबसे पहले तो आपको अपनी प्रायोरिटी पता होनी चाहिए। यदि आपको प्रायोरिटी सेट करने में मुश्किल हो रही हो तो आइजनहावर मैट्रिक्स इसमें आपकी मदद करेगा। आप अपने काम की लिस्ट बनाकर उसको मैट्रिक्स के बॉक्स नम्बर 1,2,3 और 4 में रखते जाओ। फिर भी कई बार प्रायोरिटी पता होने के बावजूद भी उस अनुसार काम नहीं हो पाते, तो आपका समय किस बॉक्स के कामों में नष्ट हो जाता है यह जानने में भी आइजनहावर आपकी मदद करेगा।

अब एक काम करो। आप खुद ही प्रायोरिटी विषय पर रिसर्च करो, प्रोजेक्ट तैयार करो और अगली बार जब हम मिलें तब सब अपने-अपने प्रोजेक्ट्स शेयर करना। ऐसे आपको अपने सभी प्रश्नों के उत्तर मिल जाएँगे। ठीक है न? “ऑल द बेस्ट!”



दूसरे ही दिन से सब रिसर्च करने में जुट गए।
रोहित को याद आया कि उसकी मम्मी उसे हमेशा
youth.dadabhagwan.org वेबसाइट पर
जाने के लिए कहती थीं। उसने वेबसाइट खोली तो
पूज्यश्री का एक अच्छा वीडियो मिला...



ज्ञानी विद् यूथ

प्रश्नकर्ता : मुझे मेरी प्रायोरिटी पता है लेकिन किसी संयोग के कारण, आलस के कारण या मौज़-मस्ती के कारण प्रायोरिटी के अनुसार नहीं चल पाता। तो प्रायोरिटी के अनुसार चल पाऊँ उसके लिए मैं क्या करूँ?

पूज्यश्री : पहले हमें प्रायोरिटी का महत्व समझना होगा कि मेरा लक्ष्य क्या है? मुझे आगे कहाँ तक पहुँचना है? यदि मैं तीन-चार साल तक फैल होकर धीरे-धीरे आगे बढ़ूँ तो चलेगा? या फर्स्ट अटेंप्ट में ही पास होना है?

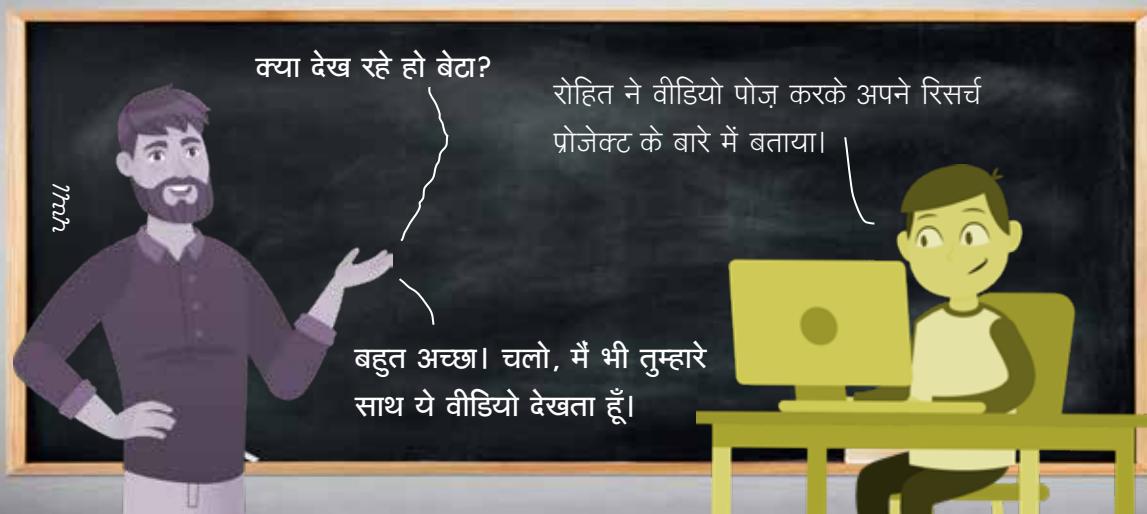
यदि बाहर के संयोग डिस्टर्ब करते हों तो उसका कोई उपाय नहीं है। हमें बाहर के संयोगों का धीरे-धीरे समझाव से निकाल करके या एडजस्टमेन्ट लेकर अपनी प्रायोरिटी के अनुसार आगे बढ़ना चाहिए। हम जिस रास्ते से जा रहे हैं वहाँ ट्राफिक बाधारूप होता हो, तो फिर पता लगाओ कि दूसरा

धीरे-धीरे छोटे-छोटे
 काम सिन्सियरली
 पूरे करते जाओ,
 तो धीरे-धीरे
 आपकी आलस
 नाम की प्रकृति
 समाप्त होती
 जाएगी।

रास्ता है? तो कहे, हाँ। तो गाड़ी घुमाकर दूसरे रास्ते से आगे बढ़ो। हम ट्राफिक को तोड़फोड़ नहीं करते हैं। वहाँ एडजस्ट होना ही पड़ता है। ये बाहर के संयोग कहलाते हैं।

आलस का क्या उपाय करोगे? यदि आपकी कोई प्रायोरिटी है, आपने कोई लक्ष्य तय किया है, तो लक्ष्य के अनुसार स्टेपिंग लो। 100% सिन्सियरिटी से काम नहीं कर पाते हो तो ऐट लीस्ट 10% सिन्सियरिटी रखो। धीरे-धीरे छोटे-छोटे काम सिन्सियरली पूरे करते जाओ, तो धीरे-धीरे आपकी आलस नाम की प्रकृति समाप्त होती जाएगी।

अगर मौज़-मस्ती करनी हो तो उसमें भी सेटिंग करो कि प्रायोरिटी के काम करते समय मुझे टाइम बरबाद नहीं करना है, सरप्लस टाइम में थोड़ा रिलैक्सेशन मेरे हिसाब से कर लूँगा। चेन्ज ऑफ वर्क इज़ रिक्रिएशन। ध्येय के विरुद्ध मौज़-मस्ती नहीं होनी चाहिए। हमें इस तरह एडजस्टमेन्ट लेकर प्रायोरिटी पूरी करनी है।



प्रश्नकर्ता : स्टडी, जॉब और फैमिली, एक यूथ को इनमें किस तरह से प्रायोरिटी सेट करनी चाहिए?

पूज्यश्री : हाँ, स्टडी अथवा जॉब, जनरली कोई एक होता है।

स्टडी करते समय अगर मम्मी-पापा का कोई काम हो तो उसे पूरा करो। क्योंकि हम कोई चौबीस घंटे पढ़ाई नहीं करते। बीच में आधा घंटा, एक घंटा टाइम पास करते ही हैं, उस समय उनके काम कर डालो।

अगर जॉब करते हो तो जॉब को प्रायोरिटी देनी पड़ेगी। जॉब के आठ-दस घंटों के अलावा बाकी के टाइम में घर के काम अच्छी तरह निपटा लो या फिर अगर दादा के काम में सेवा करते हो तो सेवा के काम निपटा लो लेकिन ये काम जॉब के आठ-दस घंटों के दरमियान नहीं करने हैं लेकिन हाँ, “मैं जॉब करता हूँ, मेरे पास घर के कामों के लिए टाईम नहीं है”, ऐसा नहीं करना। वेतन पाने के लिए बाहर के लोगों के इतने सारे काम करते हो, जबकि मम्मी-पापा के ज़िदगी भर के उपकार हैं, उनको दुःख हो ऐसा नहीं करना चाहिए। एडजस्टमेन्ट करके भी उनकी छोटी-मोटी सेवा या उनकी ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए। समझ में आया ना?

दादा के काम में
सेवा करते हो
तो सेवा के काम
निपटा लो लेकिन
ये काम जॉब के
आठ-दस घंटों के
दरमियान नहीं
करने हैं

अब मुझे समझ में आया कि मुझे प्रायोरिटी
किस तरह सेट करनी चाहिए।

हाँ, और तुम्हें हमारा पूरा
सपोर्ट मिलेगा ही!

महान् पुरुषों की ज्ञाकी

सभी रिसर्च में लग गए लेकिन तनिश अटक गया। उसे प्रोजेक्ट के लायक कोई मैटर नहीं मिल रहा था। उसे टेन्शन में देखकर उसकी दादी ने पूछा,

तनिश, क्या हुआ बेटा?
परेशान लग रहे हो?

उ

मैं कुछ मदद करूँ?

दादी, हमें पायोरिटी पर रिसर्च करना है। कोई काम या लक्ष्य पूरा करने के लिए अगर दो विकल्प हों तो किसे महत्व देना चाहिए? मेरी भलाई किसमें है? यह मैं किस तरह तय करूँ?

उ

चलो, मैं तुम्हें महाभारत का एक प्रसंग सुनाती हूँ...

क्या बताऊँ दादी, हमें कॉलेज से एक प्रोजेक्ट मिला है और मुझे उसके लिए कोई ज्यादा मैटर नहीं मिल रहा।

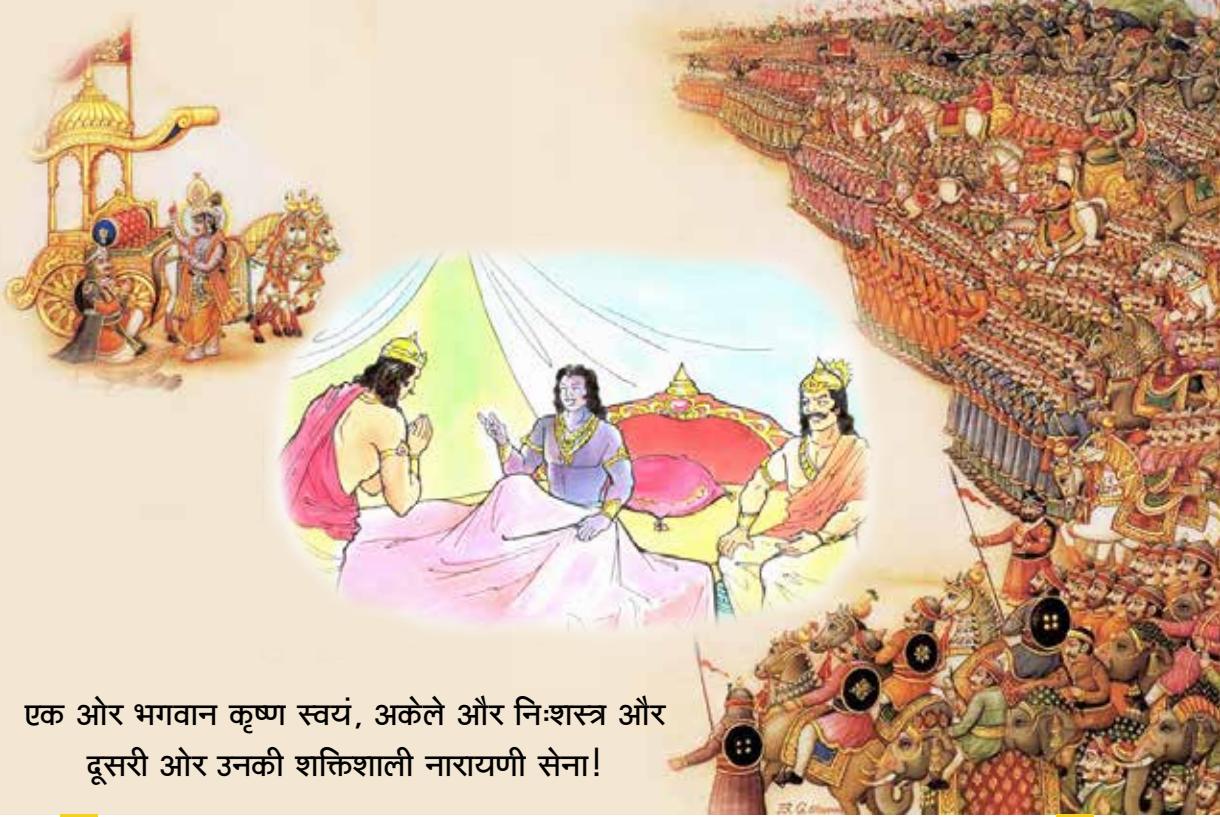
उ



महाभारत के युद्ध से पहले, दुर्योधन और अर्जुन युद्ध में सहायता माँगने हेतु श्रीकृष्ण के पास जाते हैं। उस समय श्रीकृष्ण सो रहे थे। श्रीकृष्ण के जागने के इंतजार में दुर्योधन उनके सिरहाने बैठ जाते हैं, ताकि जैसे ही श्रीकृष्ण की नींद खुले तो उनकी दृष्टि सबसे पहले उन पर पड़े और वे पहले मदद माँग सकें। जबकि अर्जुन विनयपूर्वक उनके चरणों के पास बैठकर उनके जागने का इंतजार करने लगते हैं।

आँख खुलते ही श्रीकृष्ण की दृष्टि सबसे पहले अर्जुन पर पड़ती है, और बाद में उनका ध्यान सिरहाने बैठे दुर्योधन पर जाता है। वे दोनों अपने आने का उद्देश्य श्रीकृष्ण को बताते हैं। श्रीकृष्ण उन दोनों की मदद के लिए तैयार हो जाते हैं।

श्रीकृष्ण कहते हैं, “मैं इस युद्ध में शस्त्र नहीं उठाऊँगा। लेकिन मेरे पास आप दोनों के लिए दो विकल्प हैं। आप इनमें से किसी एक विकल्प का चुनाव कर सकते हैं।” वो दो विकल्प थे,



एक ओर भगवान कृष्ण स्वयं, अकेले और निःशस्त्र और दूसरी ओर उनकी शक्तिशाली नारायणी सेना!

अपने चरणों के पास बैठे हुए अर्जुन को श्रीकृष्ण ने पहले देखा, इसलिए वे अर्जुन को पहले अपनी पसंद बताने के लिए कहते हैं। अर्जुन कहते हैं, “मुझे नारायणी सेना नहीं चाहिए, मुझे नारायण चाहिए, एक मित्र, एक गुरु, एक मार्गदर्शक और मेरे जीवन रूपी रथ के सारथी के रूप में।”

शक्तिशाली नारायणी सेना के होते हुए भी अर्जुन ने निःशस्त्र श्रीकृष्ण को क्यों चुना होगा? क्योंकि, श्रीकृष्ण को अपने साथ रखने में अर्जुन को अपना हित दिख रहा था। और उन्हें सेना के बजाय भगवान श्रीकृष्ण के साथ पर ज्यादा भरोसा था। जबकि दुर्योधन को जीतने के लिए एक विशाल नारायणी सेना चाहिए थी। इसलिए वे मन ही मन खुश हो जाते हैं और सहर्ष नारायणी सेना स्वीकार करते हैं। महाभारत के युद्ध का परिणाम क्या हुआ ये तो हम सभी जानते हैं। इसलिए जब जीवन में दो विकल्प हों तब अर्जुन की तरह उसे ही पायोरिटी देनी चाहिए जहाँ हमें अपना हित दिखाई देता हो।

दादी की बात सुनकर तनिश को अपने प्रोजेक्ट के लिए एक सटीक उदाहरण मिल गया।

थैंक यू दादी! इससे मुझे रिसर्च प्रोजेक्ट में बहुत मदद मिलेगी।

सभी स्टूडेन्ट्स अपने-अपने प्रोजेक्ट को पूरा करने में जुट गए और इस तरह एक सप्ताह बीत गया। सभी क्लासरूम में आकर प्रोफेसर श्रीवास्तव की प्रतीक्षा कर रहे थे।

गुड मॉर्निंग स्टूडेन्ट्स! मुझे उम्मीद है कि आप सभी कुछ न कुछ रिसर्च करके आए होंगे और आपको अपने सवालों के जवाब भी मिल गए होंगे।

हाँ सर! इस रिसर्च वर्क से हम सब को बहुत कुछ नया जानने और सीखने मिला है।

ग्रेट! आपने कितना रिसर्च किया और कितना सीखा यह जानने के लिए हम एक एक्टिविटी करेंगे। तैयार हो ना सब? "हाँ सर!" "यस!"



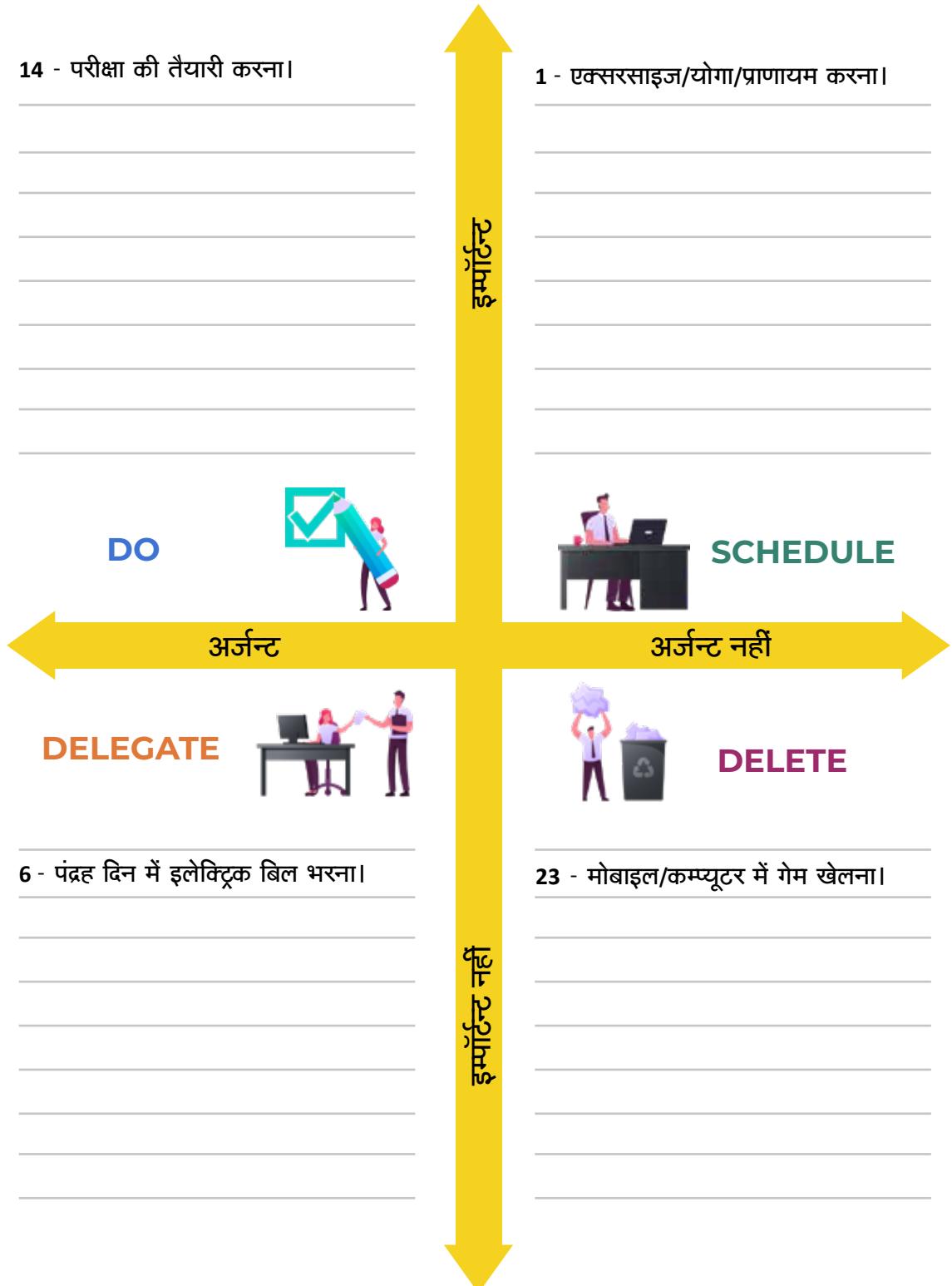
एकिटविटी- आपकी प्रायोरिटी क्या है?

चलो, रोज़ की दिनचर्या के टास्क की लिस्ट “आइजनहावर मैट्रिक्स” के अनुसार सेट करें।

- 1 - एक्सरसाइज/योग/प्राणायम करना।
- 2 - फेन्ड सर्कल की पार्टी/गेट-टुगेदर में भाग लेना।
- 3 - डॉक्टर के अपॉइंटमेन्ट में समय पर पहुँचना।
- 4 - ग्रोसरी (किराना) सामान खरीदना।
- 5 - असाइनमेन्ट समय पर पूरा करना।
- 6 - पंद्रह दिन में इलेक्ट्रिक बिल भरना।
- 7 - फेसबुक और इंस्टाग्राम चेक करना।
- 8 - मम्मी की तबियत ठीक न होने पर घर के कामों में उनकी मदद करना।
- 9 - ब्रश करना।
- 10 - सुबह जल्दी उठना।
- 11 - बुखार ठीक होने की दवाई लेना।
- 12 - फेन्ड की बर्थडे पार्टी में जाना।
- 13 - मॉल में शॉपिंग करने जाना।
- 14 - परीक्षा की तैयारी करना।
- 15 - मेहमान के लिए नाश्ता लेने जाना।
- 16 - बहन को मैथ्स में हेल्प करना।
- 17 - टीवी में फेवरेट प्रोग्राम देखना।
- 18 - पापा की गाड़ी साफ करना।
- 19 - बीमार फेन्ड की तबियत पूछने जाना।
- 20 - चर्चें की टूटी हुई फ्रेम बदलवाने जाना।
- 21 - सत्संग सेन्टर में सत्संग में जाना।
- 22 - आरती करना।
- 23 - मोबाइल/कम्प्यूटर में गेम खेलना।
- 24 - मोबाइल/कम्प्यूटर में मूविज़ या वेब सीरीज़ देखना।
- 25 - स्कूल/कॉलेज/क्लासेस नियमित रूप से अटेंड करना।

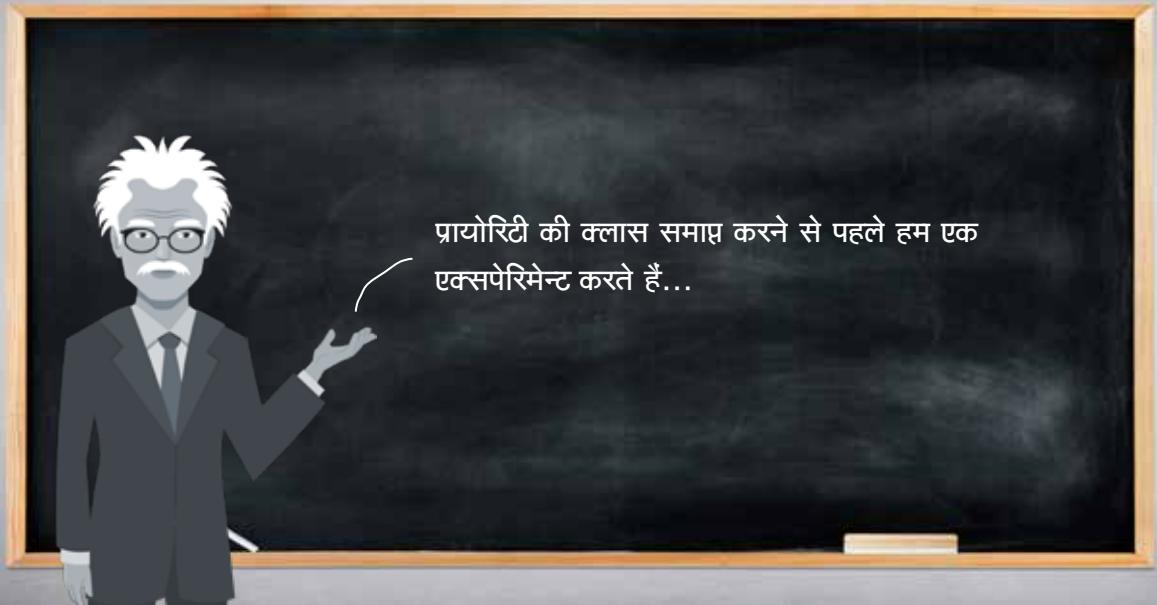
14 - परीक्षा की तैयारी करना।

1 - एक्सरसाइज/योग/प्राणायम करना।



6 - पंद्रह दिन में इलेक्ट्रिक बिल भरना।

23 - मोबाइल/कम्प्यूटर में गेम खेलना।



एक्सपरिमेन्ट

सामग्री : 2 कांच की बरनी, 2 चार-पाँच बड़े बॉल, कुछ कंचे (मार्बल) और एक कप मिठ्ठी।

तरीका :

1) पहली बरनी में :

- A) पहले, कांच की एक बरनी में मिठ्ठी भरें।
- B) फिर उस बरनी में थोड़े कंचे भरें।
- C) और फिर उस बरनी में बॉल रखें।



2) दूसरी बरनी में पहले बताए गए तरीके से बिलकुल उल्टा करें।

- A) पहले, बरनी में बॉल रखें।
- B) फिर उस बरनी में थोड़े कंचे डालें।
- C) और अंत में, बरनी में मिट्टी भरें।



निष्कर्ष :

अगर हम इस प्रयोग को अपनी लाइफ के साथ कम्पेयर करें तो,

अब तक आप समझ ही गए होंगे कि जीवन में किन कार्यों की प्रायोरिटी सबसे अधिक है और किन कार्यों की प्रायोरिटी कम है।

इस प्रयोग में,

बरनी यानी हमारे जीवन का समय,

बड़े बॉल यानी ऐसे कार्य जो सबसे अधिक प्रायोरिटी वाले हैं, जैसे कि असाइनमेन्ट की डेलाइन, परीक्षा, हेल्थ इमरजेन्सी आदि।

कंचे यानी ऐसे कार्य जिनकी प्रायोरिटी मीडियम है, जैसे कि परीक्षा की तैयारी करना, पर्सनल डेवेलपमेन्ट, लक्ष्य निर्धारित करके उसके लिए तैयारी करना, नियमित कसरत करना आदि।

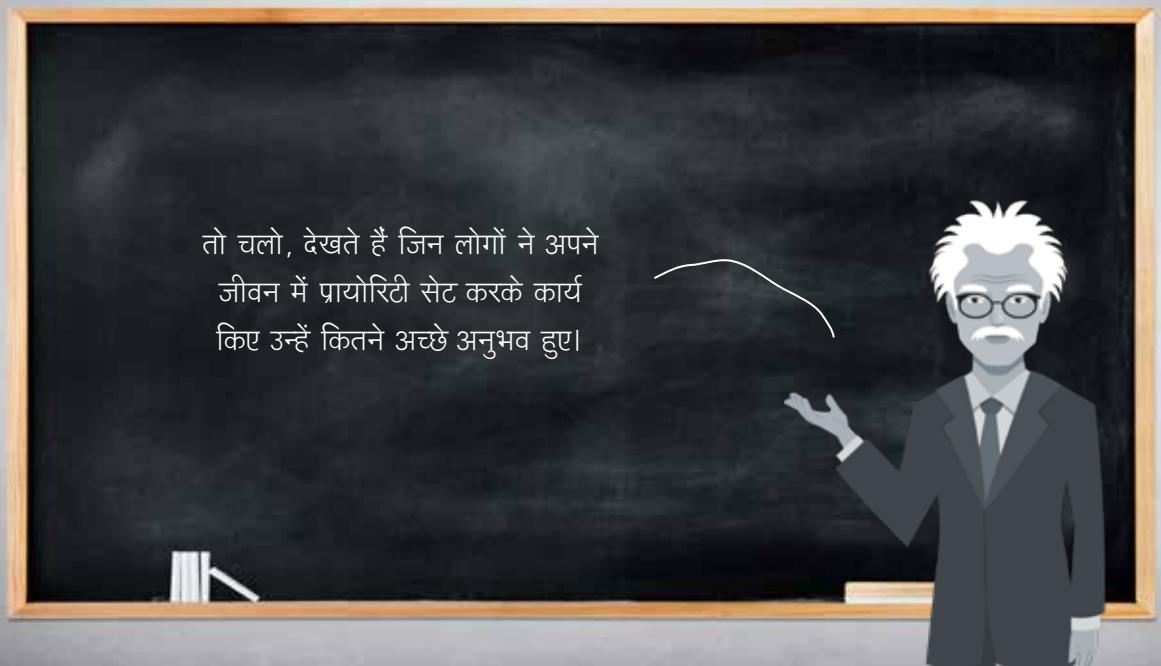
मिट्टी यानी सबसे कम महत्व वाले काम जैसे कि गेमिंग, सर्फिंग, मूविज़, सोशल मीडिया आदि।



यानी प्रयोग के पहले स्टेप की तरह यदि आप अपने कार्यों को समय रूपी बरनी में पहले मिट्टी यानी सबसे कम प्रायोरिटी वाले काम से भर दोगे तो फिर मीडियम और हाई प्रायोरिटी के कार्यों के लिए आपके पास अवकाश नहीं रहेगा।



लेकिन प्रयोग के दूसरे स्टेप की तरह यदि हम समय को पहले सबसे अधिक प्रायोरिटी वाले काम (बड़े बॉल), फिर मीडियम प्रायोरिटी वाले काम (कंचे) और अंत में सबसे कम प्रायोरिटी वाले काम (मिट्टी) में लगाएँ तो हम सब काम समय से पूरे कर पाएँगे।



तो चलो, देखते हैं जिन लोगों ने अपने जीवन में प्रायोरिटी सेट करके कार्य किए उन्हें कितने अच्छे अनुभव हुए।



धीरे-धीरे मेरा
एडिक्शन इस
कदर बढ़ गया
कि अगर मैं
पढ़ने बैठती तो
भी मेरे चित्त
में म्यूज़िक ही
घूमता रहता
था।

अनुभव

मुझे बचपन से ही सिंगिंग बहुत पसंद है। जब भी मेरे पास फ्री समय होता, तब मैं यु-ट्यूब पर गाना सुनने बैठ जाती। फिर जब मैं 9th स्टैन्डर्ड में आई तब मेरा यू-ट्यूब का एडिक्शन बढ़ने लगा। इससे मेरे मार्क्स दिन-ब-दिन कम होने लगे। इसका मम्मी-पापा को बहुत दुःख रहता था। वे लोग मुझे बहुत समझाते कि “तुम अपने शौक के खातिर अपनी पढ़ाई मत बर्बाद करो।” लेकिन अपने शौक को पूरा करने के लिए मैं उनके साथ आगर्युमेन्ट करती जिससे उन्हें दुःख रहता, जो मुझे उस समय समझ में नहीं आया। फिर धीरे-धीरे मेरा एडिक्शन इस कदर बढ़ गया कि अगर मैं पढ़ने बैठती तो भी मेरे चित्त में म्यूज़िक ही घूमता रहता था।

फिर मैं 10th स्टैन्डर्ड में आई। मेरे टीचर्स भी मुझसे पूछते थे कि मेरे मार्क्स क्यों कम आने लगे हैं? क्योंकि पहले मैं क्लास में अच्छे मार्क्स लाती थी। 10th स्टैन्डर्ड के बोर्ड एज़ाम समाप्त हो चुके थे और वेकेशन के दिनों में मैं सत्संग के टच में आई। एक सत्संग में पूज्यश्री और नीरु माँ कह रहे थे कि ‘हमारी प्रायोरिटी यह होनी चाहिए कि किसी को हमारे कारण दुःख न पहुँचे। और हमें मन लगाकर पढ़ाई करके दादा के जगत् कल्याण के काम करने के लिए एक अच्छा करियर बनाना चाहिए। एंव माता-पिता और टीचर्स को प्रसन्न करना चाहिए।’

तब मुझे रियलाइज़ हुआ कि मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। मैंने अपने शौक पूरे करने के लिए अपने शुभचितकों को बहुत दुःख दिए और अर से पढ़ाई में भी लॉस हुआ। इसलिए मैंने तय किया कि अब मैं अच्छी तरह पढ़ाई करके आगे बढ़ूँगी और मम्मी-पापा तथा टीचर्स के आशीर्वाद प्राप्त करूँगी। पढ़ाई और माता-पिता के आशीर्वाद मेरी प्रायोरिटी बन गई।

11th स्टैन्डर्ड में आने के बाद मैंने इतनी अच्छी तरह पढ़ाई शुरू की कि मुझे क्लास में फर्स्ट रैंक मिला और स्कॉलरशिप भी मिली।

- जय सच्चिदानन्द

ज्ञानी

आश्चर्य की प्रतिमा

विवाह कर के एक ही परिवार के लिए
जीवन बिताने के स्थान पर उन्होंने
बहुचर्य और जगत् कल्याण के ध्येय
को अधिक प्रायोरिटी दी।



पूज्यश्री को 17 वर्ष की छोटी आयु में ही दादा भगवान का ज्ञान मिल गया था। दादाश्री का सानिध्य, सेवा और आत्मा के सुख का स्वाद चखने के बाद उन्हें दुनिया के सुखों में विशेष रुचि नहीं रह गई थी। विवाह करके एक ही परिवार के लिए जीवन बिताने के स्थान पर उन्होंने बहुचर्य और जगत् कल्याण के ध्येय को अधिक प्रायोरिटी दी। जब उनकी माताजी की मृत्यु हो गई तब उन्होंने पिताजी की सेवा को प्रायोरिटी दी। उन्होंने लगभग दस साल व्यवसाय और घर के कामों के साथ-साथ बहुत दिल से अपने पिताजी की सेवा की। पिताजी का हृदयपूर्वक आशीर्वाद पाने के बाद पूज्यश्री ने मन-वचन-काया पूरी तरह से लोगों के कल्याण के लिए अर्पण कर दिए।

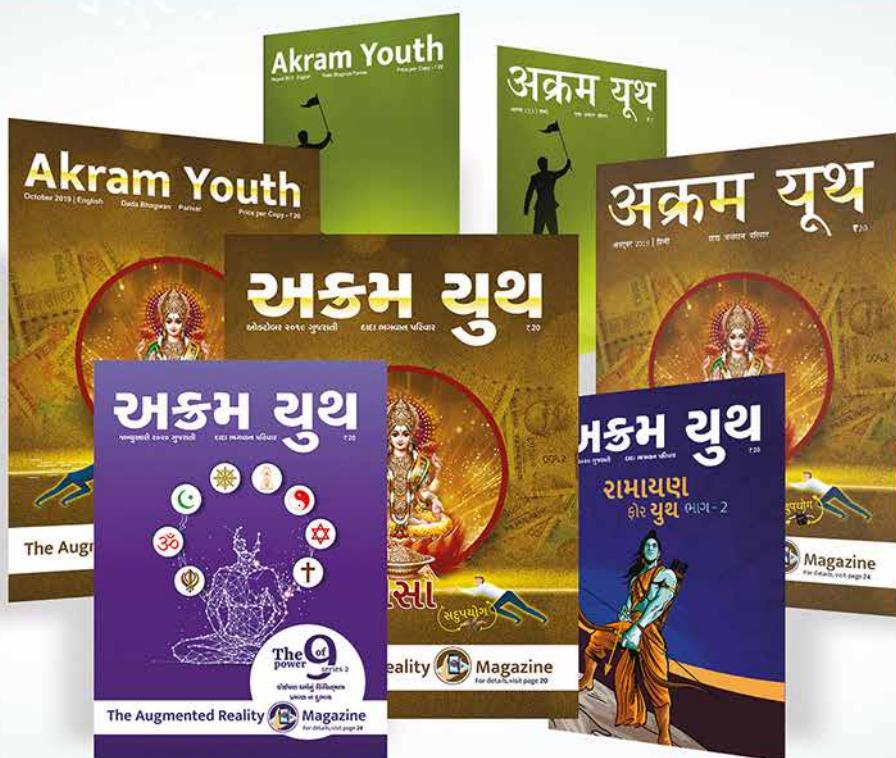
तो कैसा लगा यह प्रायोरिटी का सेशन?

सुपर्ब सर!! इस प्रयोग से हमें यह समझ में आया कि जीवन में प्रायोरिटी क्यों और कैसे तय करें। थैंक यू सो मच, सर!

गेट! तो ऐसे ही एक नए सेशन के साथ
फिर मिलेंगे, बाय बाय।

Akram Youth Magazine

Free Download



ગુજરાતી, હિન્ડી, English



youth.dadabhagwan.org

YMHT Coordinators Workshop



DWARKA

/ 2nd & 3rd October

/ 40+ Participants



BARODA

/ 16th & 17th October

/ 70+ Participants



Download Today's Youth App

App available for Android & iOS devices.



Visit youth.dadabhagwan.org/blog

Website compatible on all Browsers.



#कविता

क्या करूँ और क्या न करूँ, कन्फ्युजन ही कन्फ्युजन हे भाई,
किस तरह सेट करूँ प्रायोरिटी, वह कुछ मुझे समझ में न आए!

मित्र हों या रवजन, सोशल मीडिया या यु-ट्यूब,
तय करने प्रायोरिटी, देख लें यह ‘अक्रम यूथ’।

सभी काम साथ में करेंगे तो आधे-अधूरे रह जाएँगे,
प्रायोरिटी ध्यान में रखकर करते जाएँ, तो निश्चित ही हो जाएँगे!

खूब महेनत कर, पसंद के अनुसार करियर बनाना,
पर पीछे न रह जाए, प्यारा परिवार देखना!

होती है प्रायोरिटी अलग-अलग, सभी की अपनी-अपनी,
परिस्थिति के अनुरूप, कभी ज़रूरत पड़ती है उसे बदलने की।

पूरा घड़ा, बारीक रेत से ही भर देंगे,
तो ज़रूरी, बड़े पत्थरों का समावेश कैसे करेंगे?

किसी को ठेस न पहोंचे अपने काम से, बस इतना देख लेना,
अपनी पसंद का करने में, कभी दूसरों को दुःखी भव करना।

अभी भी वक्त है, थोड़े सतर्क बने,
क्या महत्व का है खुद के लिए, वह समझ लें।

नवम्बर 2021

वर्ष : 9, अंक : 7
अखंड क्रमांक : 103

Priority



अपना जीवन बदलाने के लिए, अपनी प्रायोरिटी बदलें।

-मार्क टवेईन

सफल होना चाहते हैं, अपनी प्रायोरिटी बदलें।

-हिमीलीसस

समय का अभाव गार्जता में प्रायोरिटी की कमी है।

-टीम फेर्डीस

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.

Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.